अध्याय – द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 साहित्य अध्ययन तथा पुनरावलोकन के लाभ

2.3 संबंधित शोध कार्य का पुनरावलोकन

अध्याय - 2

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तवना -

सतत मानव प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधान द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर पहले किए गए कार्य से बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता है। किसी भी अनुसंधान अध्ययन की आवश्यकता में महत्वपूर्ण कदमों में एक कदम अनुसंधान जनरल ओ पुस्तकों अनुसंधान विवेचना शोध लेख व अन्य सूचना स्त्रोतों की सावधानीपूर्वक समीक्षा है । किसी अच्छे नियोजित अनुसंधान अध्ययन से पहले संबंधित साहित्य की समीक्षा अति आवश्यक है।

2.2 साहित्य अध्ययन तथा पुनरावलोकन के लाभ –

- साहित्य अध्ययन तथा पुनरावलोकन किसी भी अनुसंधान कार्य के लिए आवश्यक सैद्धान्तिक व पृष्ठभूमि प्रदान करता है। प्रत्येक प्रत्यय और धारणा को स्पष्ट करता है
- इसके द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समस्या क्षेत्र में अनुसंधान की स्थिति क्या है? कब कहां किसने और कैसे अनुसंधान कार्य किया है? इसके ज्ञान द्वारा अपने अध्ययन की योजना बनाना सुविधाजनक हो जाता है।

- ❖ संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण अनुसंधान के लिए अपनाई जाने वाली विधि प्रयोग के विशेषण के लिए प्रयोग आने वाली उपयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है।
- ❖ यहाँइस तथ्य को भी आभास देता है कि किया गया अनुसंधान कार्य की सीमा तक सफल हो सकेगा और प्राप्त निष्कर्षों की उपयोगिता क्या होगी?
- ❖ इसका यह महत्वपूर्ण कार्य समस्या के परिभाषा कारण अवधारणा बनाना समस्या के सीमांकन और परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।

2.3 संबंधित शोध कार्य का पुनरावलोकन –

इस शोध के पूर्व में हुए शोध कार्य का आकलन निम्नलिखित है-

पीटर (1941), ने महिलाओं एवं पुरुषों के मध्य व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया! जिसमें पाया गया कि व्यवसयिक आकांक्षा में लिंग अपनी प्रभावी भूमिका अदा करता है उनका व्यवसाय से हैं जिन्हें पुरुषों द्वारा चुना जाता है जैसे शारिरिक क्रियाओं से संबंधित व्यवसाय, यांत्रिक, वैज्ञानिक , राजनीतिक एवं क्रय विक्रय से संबंधित को प्राथमिकता देते हैं। कुछ व्यवसाय ऐसे होते हैं जिन्हें महिलाएं प्राथमिकता देती है जैसे संगीत, साहित्य, लिपिक शिक्षक एवं सामाजिक कार्य संबंधित है।

रो (1956), ने व्यवसायिक रुचियों के सहसंबंध का अध्ययन किया 'रो ' ने इस अध्ययन में वर्गीकरण पद्धति अपनाई। समस्त व्यवसायो को दो भागों में

विभाजित कर दिया। यह शैक्षिक एवं जिम्मेदार व्यवसायों से 'रो' ने दोनो प्रकार के व्यवसायी में सहसंबंध पाया गया था ।

डायन्स चेक डिंट (1956) , ने विद्यार्थियों की व्यवसायिक रुचि एवं जीवन के प्रारंभिक वर्षों में अभिभावकों के साथ हुई अतः क्रिया के विभिन्न पक्षों के मध्य सहसंबंध ज्ञान किया साथ ही इस अध्ययन से यह निष्कर्षभी निकलता है व्यवसायिक रुचि एवं पालकों के बाहर था बाबू के मध्य संबंध नहीं है।

टाइलरऔर सेवल (1957) , ने हाईस्कूल ने विद्यार्थियों को शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यवसाय कक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया इस अध्ययन में शहरों एवं ग्रामीण तथा छात्र एवं छात्राओं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया ।

इस शोध कार्य में उन्होंने पाया कि बालिकाओं की शैक्षणिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाका उनके आवासीय से क्षेत्र से कहीं संबंध नहीं है । बालकों की व्यावसायिक आकांक्षाओ की अपेक्षा शैक्षणिक आकांक्षा आवासीय पृष्ठभूमि से अधिक संबंधित है।

वेंटर (1967) ,ने विद्यार्थियों की व्यावसायिकआकांक्षा का अध्ययन किया इस शोध में विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा एवं व्यवसायिक योग्यता का अध्ययनकिया ।प्रमुख निष्कर्ष यह है कि व्यवसाय क्षमताओं और व्यवसाय आकं आकांक्षा स्तर के मध्य सहसंबंध नहीं होता । उच्च वर्ग के विद्यार्थी का आकांक्षा स्तर तथा निम्न वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई अंतर नहीं होता है|

हॉलर और मिलर (1969) , इन्होंने परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं व्यवसायिक रुचि में सहसंबंध का अध्ययन किया । अध्ययन में उन्होंने सामाजिक आर्थिक स्तर तथा व्यवसायिक वृद्धि में धनात्मक सहसंबंध पाया

प्रेंटर ईस्ट (1972) , ने उच्च बुद्धि लब्धि एवं उच्च कक्षा स्तर तथा उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं उच्च व्यवसाय आकांक्षा के मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया तथा शोध कार्य से निष्कर्ष निकला कउच्च बुद्धि लब्धि का उच्च कक्षा स्तर के तथा उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर का उच्च व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध होता है।

हालण्ड(1976) , इन्होंने व्यवसायिकरुचि को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन किया इस अध्ययन के लिए उन्होंने व्यवसाय को तीन भागों में वर्गीकृत किया प्रथम प्रकार की व्यवसायों में वे व्यवसाये जिन्हें हैं व्यक्ति सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के कारण अपनाते हैं। दूसरे वर्ग में व्यवसाय थे जिनके व्यक्ति आवश्यकता के कारण जुड़ जाते हैं । तृतीय वर्ग में व्यवसाय थे जिन्हें हैं चरित्रवश अपनाया जाता है हालैंड ने अपने अध्ययन में दर्शाया कि पुरुषों में 8 रचनाएं होती है तथा यह आदेशात्मक होती है ।

डॉक्टरेट उपाधि हेतु किये गये शोध कार्य –

रेड्डी **(1972)** , इन्होंने व्यवसायिक आवश्यकता तथा व्यवसायिक चुनाव से संबंधित अध्ययन किया था यह अध्ययन उच्चतर माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों पर किया गया ! इस शोध कार्य में परिवार का आर्थिक स्तर तथा व्यवसायिक चुनाव तथा व्यवसाय का आवश्यकता के मध्य से ससहसंबंध पाया गया ।

बोहरा **(1977)** , ने व्यवसायिक चयन एवं बुद्धिमत्ता शैक्षिक अभिरुचि व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि में सह संबंध पर शोध कार्य किया ।यह अध्ययन पॉलिटेक्निक के विद्यार्थियों पर किया गया था । इस अध्ययन में व्यवसाय चयन बुद्धिमत्ता शैक्षणिक अभिरुचि , व्यक्तित्व एवं शिक्षण उपलब्धि में कोई सह संबंध नहीं पाया गया ।

सिन्हा **(1978)** , इन्होंने व्यवसायिक रुचि से संबंधित अध्ययन किया था । इस शोध कार्य में माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया था इनमें धनात्मक सहसंबंध पाया गया ।

सानूखिया **(1984)** , इन्होंने असम राज्य में व्यवसायिक शिक्षा के उच्च स्तर माध्यमिक पाठ्यक्रम से संबंधित अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों की व्यावसायिक रुचियां उनके निवास स्थान की भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है । अतः किसी भी क्षेत्र में व्यवसायिक पाठ्यक्रम छात्राओं की योग्यता

,रूचि, भावी, आवश्यक भौगोलिक परिस्थितियों एवं उस क्षेत्र में उपलब्ध कच्चे माल को ध्यान में रखते हुए निर्धारित करने चाहिए।

मनगत डी (1988) , ने व्यावसायिक परिपक्कता का बुद्धिमत्ता सामाजिक आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया, मनगत डी ने अपने शोध कार्य में उपरोक्त चारों के मध्य से संबंध पाया था ।

जैन (1989) , इन्होंने वाणिज्य के सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया था ।इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था । न्यादर्श के रूप में अजमेर के जिन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 50 सामान्य विद्यार्थी तथा 50 अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों को लिया गया था , इस अध्ययन में पाया गया कि 64% छात्र आगे पढ़ना चाहते हैं तथा शेष उच्च व्यवसाय आकांक्षा रखते थे ।

ओंकार (1989) , इन्होंने कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा का बुद्धिमत्ता तथा पालकों की शिक्षा एवं व्यवसाय के मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया था । उन्होंने इस अध्ययन में पाया कि जो विद्यार्थी अधिक बुद्धिमान है उन्होंने उच्च प्रकार के व्यवसायओं का चयन किया । जिन विद्यार्थियों के पिता उच्च शिक्षा प्राप्त थे वे विद्यार्थी अधिक बुद्धिमान थे । विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा एवं बुद्धिमत्ता का उनके पिता की शिक्षा एवं व्यवसाय के मध्य सहसंबंध पाया गया है |

मास्टर स्तर पर किये गये शोध –

वर्मा (1991), ने विकलांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के मानसिक कार्य निष्पादन एवं व्यवसाय शिक्षा पर शोध कार्य किया था। न्यादर्श के लिए भोपाल के विद्यालयों के 50 विकलांग विद्यार्थियों को चुना गया था। इस अध्ययन में सामान्य विद्यार्थियों के मानसिक कार्य निष्पादन एवं व्यवसायिक इच्छा के मध्य कोई संबंध नहीं पाया गया। जबकि विकलांग विद्यार्थियों के कार्य निष्पादन एवं व्यावसायिक रुचि के मध्य सहसंबंध पाया गया था।

केवलराम राजकुमार (1999), कक्षा 11वीं और 12वीं के छात्र छात्राओं की मानसिक योग्यता एवं व्यवसाय रूचि का अध्ययन किया इस अध्ययन का यह निष्कर्ष था कि छात्र-छात्राओं की वाणिज्य संबंधी व्यवसायिक रुचि में कोई अंतर नहीं है, दोनों संकाय के छात्र छात्राओं की मानसिक योग्यता समान थी।

शर्मा (1999) , ने नगरीय एवं उप नगरीय क्षेत्रों में अध्ययनरत बालिकाओं की मानसिक योग्यता एवं व्यवसाय की रुची का तुलनात्मक अध्ययन किया था। इस अध्ययन में नगरीय एवं उपनगरी छात्राओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर पाया था, जबकि व्यवसायिक रुचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया था।

सुदिष्ठ (1993) , ने बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की भविष्य योजनाओं का अध्ययन किया ! इस अध्ययन में विद्यार्थियों की व्यवसायिक रुचि का भी अध्ययन किया गया था । इस अध्याय ने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की भविष्य योजना में अंतर पाया गया था।

नामदेव (1994) , ने नवोदय विद्यालय में विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का अध्ययन किया था इस अध्ययन में निष्कर्ष पाया किनवोदय विद्यालय के अध्ययनरत विद्यार्थियों को सामाजिक आर्थिक स्तर एवं व्यवसायिक रुचि में संबंध पाया गया था।

शर्मा (1994) , ने आदिवासी एवं गैर आदिवासी क्षेत्र की छात्राओं की व्यवसायिक एवं शैक्षणिक आकांक्षाओं का अध्ययन किया गया था इस अध्ययन से निष्कर्ष निकलाकी आदिवासी एवं गैर आदिवासी क्षेत्र की छात्राओं की व्यवसयिक आकांक्षा में सार्थक अंतर नहीं है लेकिन आदिवासी एवं गैर आदिवासी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है ।